International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 10-08-2023, Accepted: 22-08-2023, Published: 11-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 9-12

आधुनिक हिन्दी उपन्यासों मे मनोवैज्ञानिकता

रीना मेवाड़ा[1], तबस्सुम ख़ान[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, श्री सत्य साईं विश्वविद्यालय, पचामा, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत
[2] शोधार्थी निर्देशिका, हिन्दी विभाग, श्री सत्य साईं विश्वविद्यालय, पचामा, सीहोर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
मनोवैज्ञानिक उपन्यासों सामान्य व्यक्ति की असामान्य मनोदशा और आचारों का आंकलन होता है, साथ ही असामान्य व्यक्ति की असामान्य अवस्था भी चित्रित होती है। आधुनिक नर–नारियों के बीच प्राचीन सामाजिक सम्बन्धों में दरारें पड़ने लगी हैं इन्हीं का नग्न चित्र मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मिलता है। इसका परिणाम यह हुआ कि उपन्यास साहित्य संकीर्ण से संकीणंतर होता गया। उपन्यासकार समाज को छोड़कर उसके अवचेतन मन के कार्यकलाप का विश्लेषण करने लगा। इस प्रवृत्ति से युक्त उपन्यासों के पात्र समाज में नहीं, स्वयं में जीते हैं। व्यक्तिगत कुंठाएँ प्रमुख हो जाती हैं। ऐसे आत्मपरक उपन्यासों में अज्ञेय के ''नदी के द्वीप'' और ''अपने–अपने अजनबी'' की गणना है। राजेन्द्र यादव के ''अनदेखें अनजान पुल'' (1963) में कुरुपता से उत्पन्न हीनभावना का इतिहास है। धर्मवीर भारती के ''गुनाहों का देवता'', ''सूरज का सातवाँ घोडा'', देवराज के ''पथ की खोज'', ''अजय की डायरी'', मोहनराकेश का ''अँधेरे बन्द कमरे'' (1961) निर्मल वर्मा के ''वे दिन'', कमलेश्वर का ''डाक बँगला'', राजकमल चौधरी का ''मछली मरी हुई'', अमरकान्त का ''कटीली राह के फूल'', द्वारिका प्रसाद का ''मम्मी बिगडेगी'', नरेश मेहता का ''डूबते मस्तूल'', उषाप्रियंवदा का ''झुकोगी नहीं राधिका'', मेहरुन्निसा परवेज़ का ''आँखों की दहलीज'' और कृष्णा–सोबती का ''सूरजमुखी अँधेरे के'', आदि उपन्यास मनोविज्ञान द्वन्द्व व मनोविश्लेषण पर आधारित है।
मनोवैज्ञानिक उपन्यास अपनी वस्तु और शैली में अन्य उपन्यासों से बहुत भिन्न होते है। मनोवैज्ञानिक उपन्यास मूलतरू मनोविश्लेषण पर आधारित है। व्यक्ति मानस का विश्लेषण, उसके अचंतन मन की छानबीन, उसके मानसिक अंतर्द्वन्द्वों और भावों का प्रकटीकरण, उसके मन के अज्ञान कोनों के भीतर दमित कामनाओं एवं पशुवृत्तियों का उद्घाटन मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का प्रमुख विषय है? हिन्दी में सबसे पहले मनोविज्ञान के कुछ तत्व सच्चे रूप में प्रेमचन्द के उपन्यासों में ही मिलते हैं। उन के वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि, गोदान आदि उपन्यासों में भी मनोविज्ञान का अंश झलकता है।

मूल शब्दः मनोवैज्ञानिक उपन्यास, मनोविश्लेषण, दमित कामनाओं

हिन्दी उपन्यासों में मनोविज्ञान का स्वरूप

दास्तो एवस्की जैसे उपन्यासकारों की कृतियों से भिन्न है आज का मनोवैज्ञानिक उपन्यास। पुरानी रचनाओं में वस्तु वैज्ञानिक होने पर भी रूप कथात्मक या इतिवृत्तात्मक होता था, लेकिन आज का मनोवैज्ञानिक उपन्यास कथानक या इतिवृत्त का आश्रय लेकर नहीं चलता बल्कि पाठक को वह प्रत्यक्ष अनुभव के समान प्रतीत होता है। हिन्दी उपन्यासों में भी जिन्हें हम मनोवैज्ञानिक उपन्यास की संज्ञा देते है, ये ही बातें मुख्य रूप से पायी जाती है। मनोवैज्ञानिक तत्व तो प्रेमचन्द तथा प्रेमचंद के पूर्व के उपन्यासों में यंत्र–तंत्र मिल जायेंगे, लेकिन हम उन सब को मनोवैज्ञानिक उपन्यास नहीं कह सकते। मनोवैज्ञानिक उपन्यास की कुछ अपनी अलग विशेषताएँ होती है जिनके आधार पर हम उन्हें अन्य उपन्यासों से अलग मानते हैं। डॉ. देवराज उपाध्याय ने मनोवैज्ञानिक उपन्यास की निम्नलिखित विशेषतायें बतलायी है।''

विशेषताएँ

1. मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में सुसंगठित कथावस्तु के प्रति उदासीनता होती है। इसमें कथानक की कड़ियों की बारीकी पर ध्यान नहीं दिया जाता। घटनाएँ गौण होती हैं। पात्रों के आन्तरिक भाव–चक्र को व्यक्त करना ही इन घटनाओं का लक्ष्य है।
2. कथा जीवन के बृहद् अंश को घेरने वाली नहीं होती। विस्तार की अपेक्षा कथा की गहराई पर लेखक का ध्यान अधिक रहता है। हिन्दी के ''शेखरः एक जीवनी'', ''नदी के द्वीप'', ''सराय'', ''निर्देशक'' इसी प्रकार के उपन्यास है[1]
3. पात्रों की न्यूनता मनोवैज्ञानिक उपन्यास की खास विशेषता है। अज्ञेय, जैनेन्द्र के उपन्यासों में यह बात स्पष्ट परिलक्षित होती है।
4. मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में वर्णनात्मकता से नाटकीयता अधिक दृष्टिगत होती है। घटनाओं का संयोजन इस प्रकार होता है कि वे स्वयं स्फूर्त हो, स्वयं शक्तिमान हो। उन्हें लेखक के साथ चलने की अधिक अपेक्षा न हो।
5. मनोवैज्ञानिक उपन्यास के पात्रों की जानकारी में आत्मीयता की हाद्रता होती है। उन्हें हम साथी की तरह जानते हैं, लेकिन अन्य उपन्यासों में पाठक पात्रों को अपने से भिन्न मानता है, जबकि मनोवैज्ञानिक उपन्यास के पात्र पाठक से पूर्व परिचित होते हैं।

युंग के अनुसार मनोवैज्ञानिक उपन्यास में दो पात्र है.पहला बहिर्मुखी और दूसरा अन्तर्मुखी बहिर्मुखी पात्रों के अन्तर्गत बहिर्मुखी विचारक, बहिर्मुखी भावुक, बहिर्मुखी अन्तर्दशक और बहिर्मुखी संवेदक को लिया जाता है। अन्तर्मुखी पात्र महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के प्रमुख नायक और नायिकाएँ अधिकतर इसी कॉटी में आती है। अन्तर्मुखी पात्रों में अन्तर्मुखी विचारक, अन्तर्मुखी भावुक, अन्तर्मुखी अंतदर्शक और अंतर्मुखी संवेदक को लिया जाता है। इनके अतिरिक्त मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में कुछ पात्र भी प्रमुख है। ये है

1. असाधारण या एब्नार्मल पात्र
2. कुण्ठित पात्र
3. वासना परिचलित पात्र
4. अहम् से परिचलित पात्र
5. पलायनवादी पात्र
6. हीनताग्रस्त पात्र
7. जटिल प्रकृतिवाले पात्र
8. पात्रों की कामगत कुंठाएँ और उसके प्रति प्रतिक्रिया
9. स्वप्न जगत में विचरण करने वाले पात्र

मनोवैज्ञानिक उपन्यास की प्रथम विशेषता मानसिक वस्तु का चित्रण है। ''चेतना
प्रवाह'' को मनोवैज्ञानिक उपन्यास की वस्तु कहा गया है। मनोवैज्ञानिक उपन्यास को ''चेतना प्रवाहांकित'' या ''अन्तर्विवादात्मक उपन्यास' भी कहते हैं।

रॉबर्ट हम्फ्री ने मनोवैज्ञानिक उपन्यास की परिभाषा देते हुए कहा कि–''चेतना प्रवाहांकित उपन्यास कथा–साहित्य का ऐसा प्रकार है जिसमें चरित्र के चौतसिक अस्तित्व को प्रकट करने के लिए चेतना के पूर्ववाक् स्तर के अन्वेषण पर मूलभूत रूप से ज़ोर दिया जाता है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास मानव जीवन के यथार्थ को समझने बुझने के साहित्यिक प्रयास है। मानव मन की गहराई में जाने की चेष्टा इन उपन्यासों में हुई है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार मनुष्य के बाहरी क्रियाकलापों को छोड़कर उसके भीतर झाँकने का प्रयास करता है, उसकी चेतना को ही अपने वर्णन का आधार मानता है।

''मानव मस्तिष्क एक उबलता हुआ कड़ाह है। उसमें सारी चीज़े उपने अस्थिर रूप में वर्तमान रहती है। इस अस्थिरता और चंचलता को स्थिर और दृढ़ रूप में दिखलाने का प्रयत्न मनोवैज्ञानिक उपन्यास करता हैए नश्वर स्वर में अनश्वर गीत गाने का प्रयत्न करता है।''

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों सामान्य व्यक्ति की असामान्य मनोदशा और आचारों का आंकलन होता है, साथ ही असामान्य व्यक्ति की असामान्य अवस्था भी चित्रित होती है। आधुनिक नर–नारियों के बीच प्राचीन सामाजिक सम्बन्धों में दरारें पड़ने लगी हैं इन्हीं का नग्न चित्र मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में मिलता है। इसका परिणाम यह हुआ कि उपन्यास साहित्य संकीर्ण से संकीणंतर होता गया। उपन्यासकार समाज को छोड़कर उसके अवचेतन मन के कार्यकलाप का विश्लेषण करने लगा। इस प्रवृत्ति से युक्त उपन्यासों के पात्र समाज में नहीं, स्वयं में जीते हैं। व्यक्तिगत कुंठाएँ प्रमुख हो जाती हैं। ऐसे आत्मपरक उपन्यासों में अज्ञेय के ''नदी के द्वीप'' और ''अपने–अपने अजनबी'' की गणना है। राजेन्द्र यादव के ''अनदेखें अनजान पुल'' (1963) में कुरुपता से उत्पन्न हीनभावना का इतिहास है। धर्मवीर भारती के ''गुनाहों का देवता'', ''सूरज का सातवाँ घोडा'', देवराज के ''पथ की खोज'', ''अजय की डायरी'', मोहनराकेश का ''अँधेरे बन्द कमरे'' (1961) निर्मल वर्मा के ''वे दिन'', कमलेश्वर का ''डाक बँगला'', राजकमल चौधरी का ''मछली मरी हुई'', अमरकान्त का ''कटीली राह के फूल'', द्वारिका प्रसाद का ''मम्मी बिगडेगी'', नरेश मेहता का ''डूबते मस्तूल'', उषाप्रियंवदा का ''झुकोगी नहीं राधिका'', मेहरुन्निसा परवेज़ का ''आँखों की दहलीज'' और कृष्णा–सोबती का ''सूरजमुखी अँधेरे के'', आदि उपन्यास मनोविज्ञान द्वन्द्व व मनोविश्लेषण पर आधारित है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास अपनी वस्तु और शैली में अन्य उपन्यासों से बहुत भिन्न होते है। मनोवैज्ञानिक उपन्यास मूलतरू मनोविश्लेषण पर आधारित है। व्यक्ति मानस का विश्लेषण, उसके अचंतन मन की छानबीन, उसके मानसिक अंतर्द्वन्द्वों और भावों का प्रकटीकरण, उसके मन के अज्ञान कोनों के भीतर दमित कामनाओं एवं पशुवृत्तियों का उद्घाटन मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का प्रमुख विषय है? हिन्दी में सबसे पहले मनोविज्ञान के कुछ तत्व सच्चे रूप में प्रेमचन्द के उपन्यासों में ही मिलते हैं। उन के वरदान, प्रतिज्ञा, सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि, गोदान आदि उपन्यासों में भी मनोविज्ञान का अंश झलकता है।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के कथानक में पाई जानेवाली सामान्य प्रवृत्तियाँ

शेखरःएक जीवनी, सन्यासी, पर्दे की रानी, गुनाहों का देवता तथा बैसाखियों वाली इमारत में मानव की सहजात प्रवृत्ति ''अहम् बड़े प्रमुख रूप से पाई जाती है। दमित कामवासना के कारण सोया हुआ जल के राजेश और विभा पति–पत्नी होने पर भी स्वप्न में अपने अपने पुराने प्रेमियों को चाहते हैं। सुखदा, विवर्त, सन्यासी, शहर में घूमता आईना, अनदेखे अनजानपुल, लौटती लहरों की बांसुरी आदि उपन्यासों में हीनताग्रंथी के कारण पात्रों के जीवन में आए उतार–चढ़ाव का बड़ा ही अच्छा वर्णन लेखक ने किया है। सन्यासी के नन्दकिशोर में बलदेव के साथ शांति का स्नेह सम्बन्ध देखकर व्यर्थ ही हीनता ग्रंथि का निर्माण हुआ था। अनब्याही और अनचाही ''अनदेखे अनजान पुल'' की निन्नी में अपनी कुरुपता के अहसास के कारण जब हीनता ग्रंथि घर कर जाती है तब उसकी ईश्वर पर आस्था उठ जाती है। ''प्रेत और छाया'' में इडीपस ग्रंथि से पीड़ित पात्रों का भी उल्लेख मिलता है। ''प्रेत और छाया''तथा ''दिगम्बरी'' में ''इलेक्ट्रा ग्रन्थि'' के भी कुछ उदाहरण मिलते है। शेखर एक जीवनी, नदी के द्वीप, पर्दे की रानी, शहर में घूमा आईन, ''मछली मरी हुई'' आदि उपन्यासों में स्वलिंगी प्रेम (Homo Sexuality) के कई उदाहरण मिलते है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में पागलों, हिस्टीरिया ग्रस्त रोगियों, रुग्ण आसक्त से पीड़ित पात्रों, (Sexual pervert) मनुष्यों, तथा कुंठा, ऊब, नीरसता, संवेदना एवं रतिभाव की असफलता से पूरित मानवों के उदाहरण मिलते है। ''व्यतीत'' के जयन्त की अनिता के प्रति रुग्ण आसक्ति (Morbid Fixation)के परिणामस्वरूप ही सुमित्रा,चन्द्री, कपिला आदि मरियों की जिन्दगी तबाह होती है।

सुनीता का हरिप्रसन्न Sexual pervert टाईप का व्यक्ति है, जो सुनीता के शरीर का उपभोग करने की अपेक्षा नग्न शरीर के दर्शन से ही तृप्त होता है। इसी उपन्यास का नायक श्रीकांत भी ऐसा असाधारण है जो अपने प्रणय–जीवन में आनंद प्राप्ति के लिए एक आहत तृतिय पक्ष की आवश्यकता की महसूस करता है। ''त्यागपत्र'' की मृणाल यौन विकृतियों के कारण आत्मपीडन (Moschism) की शिकार बनी है।

मूल प्रेरणास्रोतों के आधार पर पात्रों का वर्गीकरण

असाधारण या अबनॉर्मल पात्र

इस कोटि में वे ही पात्र आ जाएँगे जिनका आचार–विचार, चिंतन, रहन–सहन साधारण व्यक्ति से भिन्न होगा। एक कटी हुई जिन्दगी ''एक कटा हुआ कागज'' का अनाम नायक इसी प्रकार का असाधारण व्यक्ति है। चिन्तन के क्षेत्र में अपने युग से काफी आगे होने के कारण वह यथार्थ की दुनिया में स्वयं को जीने लायक नहीं समझता।

कुण्ठित पात्र

व्यक्ति की इच्छापूर्ति में प्रकृति या व्यक्ति द्वारा बाधा पहुँचने पर कुंठा का निर्माण होता है। कुंठा अधिकतर सुशिक्षित व्यक्तियों में होती है। व्यक्ति ही सफलता में रोड़े अटकाने का कार्य शारीरिक दोष जैसे कुरुपता, दुर्बलता या व्यक्तिगत दोष जैसे कुशलता की कमी, संकटों का मुकाबला करने की अक्षमता करते है। ''अनदेखे अनजान पुल'' की निन्नी अत्यधिक सुशिक्षित होने से अपनी असंदुरता ही अनुभूति से कुंठित होती है।

वासना परिचालित पात्र

वासना का शिकार होना या उससे उदास रहना व्यक्ति को असाधारणता की कोटि में ले जाता है। वैसे वासना से उदास रहने वालों को ''नपुंसक'' भी कहा जाता है। जैनेन्द्र के अधिकांश नायक इसी कोटि में आते हैं। सुनिता का ''श्रीकांत'' इसी कोटि का पात्र है। वासना जब सीमा के बाहर जाती है तब उस व्यभिचार कहा जाता है। ऐसे व्यभिचारी नायिकाओं में ''डूबते मस्तूल'' की रंजना प्रमुख है।

''अहम'' से परिचालित पात्र

कुछ पात्र उपन्यासों में ऐसे भी आयो हैं जिनका सारा जीवन ''अहम'' के कारण असाधारण कोटि का बन गया है। अज्ञेय जी ने अहम् को लेकर उन्होंने शेखर एक जीवनी की रचना की है। काम की भावना को लेकर ''नद्दी के द्वीप'' में जैसे अराजकतावादी पात्रों का निर्माण किया है। भय की भावना रेखा और भुवन को लेकर अपने.अपने अजनबी का निर्माण किया है।

पलायनवादी पात्र

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में अधिकतर ऐसे ही पात्र मिलते हैं जो जिम्मेदारियों से पलायन करते हैं। किसी कठोर पारिस्थित को देखकर उसका मुकाबला करने की अपेक्षा मुँह चुराते है। उन्हें अपनी जाति कुल का तो छोड़िए, अपने व्यक्तित्व का भी ध्यान रहता नहीं। जोशी जी के सन्यासी का नन्दकिशोर, प्रेत और छाया का पारसनाथ, मंजरी को, अंधेरे बन्द कमरे का मधुसूदन ''सूषमा'' को तथा बैशाखियों वाली इमारत का पत्रकार ''वसुधा'' को एक विचित्र स्थिति में छोड़कर चले जाते है।

हीनताग्रस्त पात्र

पात्रों के असाधारण आचरणों में हीनता ग्रंथि भी सहायक होती है। प्रेत और छाया का नायक पारसनाथ एक सुशिक्षित व्यक्ति होने पर भी पिता के द्वारा स्वयं को जारज संतान जानकर संसार भर की नारियों के प्रति क्षुब्ध से उठता है। विकृति प्रतिहिंसा की भावना से उसने अपने सम्पर्क में आयी हुई सभी नारियों का सत्व हरण किया।

जटिल प्रकृति वाले पात्र

अणु–बम का प्रयोग करने पर रेडियो सक्रियता के कारण पृथ्वीराज विचित्र आकृति– प्रकृति वाले मनुष्य पैदा होंगे, यह वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी आकृति वाली बात में भले ही गलत सिद्ध हो गई ये, किन्तु जहाँ तक प्रकृति का प्रश्न है, वहाँ अवश्य सत्य सिद्ध हुई है। इसी प्रकार की विचित्र प्रकृतिवाला पात्र ''चाँदनी के खण्डहर'' का नायक वसंत है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के लिए ऐसे ही जटिल प्रकृति के पात्रों की आवश्यकता होती है।

पात्रों की कामगत कुंठाएँ और उसके प्रति प्रतिक्रिया

सामाजिक तथा नैतिक नियमों के कारण दमित वासना की पूर्ति करने की चेष्टा हर पात्र अपने अपने ढंग से करता है। कभी वह होती है कभी होती नहीं। ऐसी एक नायिका है निन्नी। कुरुपता के कारण निन्नी की कामेच्छा न विवाह द्वारा पूरी होती है न किसी प्रेमी द्वारा। अपने उपेक्षित यौवन को यौवन ही अनभोगा बीतते हुए देखकर निन्नी स्पर्श द्वारा कामेच्छा की हल्की सी पूर्ति कर लेती है।

स्वप्न जगत में विचरण करने वाले पात्र

स्वप्न जगत में पात्र अपनी दमित इच्छाओं की पूर्ति के लिए विचरते है? अचेतन वासियों को चेतन जगत में उसी रूप में अवचेतन के द्वार पर खड़ा प्रहरी सेंसर आने नहीं देता। अतः वे अपना रूप बदलकर सेंसर को धोखा देकर चेतन जब निद्रावस्था में रहता है तब आते हैं।

पात्रों के दिवास्वप्न

दिवास्वप्न अत्यधिक कल्पना का एक रूप तथा मनुष्य के स्वभाव का अंग है। वास्तविक जीवन में कुंठित, निराश अथवा असफल व्यक्ति दिवास्वप्नों द्वारा अपनी दमित अथवा अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति करता है। बारह घंटे की ''जेनी'' इसके लिए एक उदाहरण है।

कल्पना लोक में जीने वाले पात्र

पूर्व अनुभूतियों की पुनयोजना से अपूर्व की अनुभूति उत्पन्न करने की। क्रिया या शक्ति को ''कल्पना'' कहते हैं? जेम्स ड्राइव ने कल्पना की व्याख्या कैसे लिखा है कि– 'The constructive employment of past perceptual experience, revivedAs images inA present experienceAt the ideational level, which is not in the totalityA reproduction ofA past experience, butA new origination of material derived from past experience's वर्तमान का अवगाहन करने का कार्य ''प्रत्यक्ष'' और अतीत का अवगाहन करने का कार्य जैसे ''स्मृति'' करती है, वैसे ही अनागत का अवगाह करने का कार्य ''कल्पना'' करती है।

चरित्र चित्रण की पद्धतियाँ

उपन्यास के पात्रों का चरित्र चित्रण प्रमुखतः दो प्रणालियों द्वारा किया जाता है। एक है बहिरंग, चरित्र चित्रण प्रणाली (objective method) और दूसरी है अंतरंग चरित्र–चित्रण प्रणाली (Subject method)A चरित्र चित्रण की एक और भी प्रणाली पायी जाती है ''नाटकीय चरित्र चित्रण प्रणाली।''

बहिरंग चरित्र चित्रण प्रणाली

सर्वसाधारण उपन्यासों में बहिरंग चरित्र–चित्रण प्रणाली पायी जाती है, जिसमें उपन्यासकार पात्रों को नामकरण, उनका प्रथम परिचय, उनकी आकृति और वेशभूषा, उनका स्थित्यंकन, क्रिया–प्रतिक्रियाओं तथा अनुभवों का चित्रण करता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार अपने पात्रों के निर्माण का दावा कर सकता है किन्तु उनके चरित्र–विकास पर उसका अधिकार नहीं चल सकता। मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार अपने पात्रों को परिस्थितियों पर छोड़ देते हैं। जैसे–जैसे परिस्थितियाँ आती जाती है पात्र की क्रिया प्रतिक्रिया वैसी ही होती है।

अंतरंग चरित्र चित्रण प्रणाली

अंतरं, चरित्र–चित्रण प्रणाली की प्रथम सीढ़ी अन्तः प्रेरणाओं का चित्रण है, जिसी व्याख्या करते हुए ठवें ने कहा था कि– 'TheAssigning of motivesAnd the reactions which they cause is called कार्य करता motivation अर्थात् फ्रायडीयन सिद्धान्त द्वारा व्यक्ति जो कुछ है उसके पीछे उसके अचेतन का हाथ रहता है। अतः मनुष्य के व्यक्त स्वरूप की अपेक्षा उसके अव्यक्त स्वरूप को भी जानना भी आवश्यक है। यही कारण है कि मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार केवल क्रिया–प्रतिक्रियाओं के चित्रण तक ही सीमित न रहकर उसके मानसिक संघर्ष, बाह्य वातावरण के प्रति पात्र का बदलता दृष्टिकोण तथा प्रगट व्यवहार की अन्तः प्रेरणाओं को भी प्रकाश में लाने की चेष्टा करता है।

अन्तर्द्वन्द्व (Internal complicate)–(इंटर्नल काफ्लिक्ट)

आत्मबल और इच्छा शक्ति के अभाव में किसी के पात्र में गन्तव्य का ठीक दिशा–बोध न होनो के कारण अन्तर्द्वन्द्व छिड़ जाता है। पात्र किसी न किसी रूप से निश्चय कर भी लेता है तो बड़े अनमने भाव से? किन्तु निश्चय पर पहुँचने से पहले ही वह अन्तर्द्वन्द्र का फिर से शिकार हो जाता है। बाह्य संघर्ष की अपेक्षा अन्तर्मन का संघर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसे केवल अन्तर्द्वन्द्र के द्वारा कोई उपन्यासकार प्रस्तुत नहीं कर सकता। अतः अन्तर्मन के संघर्ष को उघाड़ने के लिए उपन्यासकार को मनोविश्लेषण, स्वप्नविश्लेषण, निराधार प्रत्यक्षीकरण विश्लेषण, सम्मोहन विश्लेषण, प्रत्यवलोकन विश्लेषण, पूर्ववत् प्रणाली, शब्द–सहस्मृति परीक्षा आदि मनोवैज्ञानिक प्रणालियों का सहारा लेना पड़ता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में जैसे त्यागपत्र, कल्याणी, पढ़ें की रानी, शेखर एक जीवनी आदि में थोड़ा बहुत अन्तर्द्वन्द्व मिलता है किन्तु यह अन्तर्द्वन्द्व बहिर्मुखी पात्रों में अधिक मिलता है अन्तर्मुखी पात्रों में कम। मनोवैज्ञानिक उपन्यासा में अधिकतर अन्तर्मुखी पात्रों होते है। अतः अन्तर्द्वन्द्व को अपेक्षा उनमें अन्तर्विवाद (Interior Monologue) अधिक मिलता है।

पूर्ववृत्तात्मक प्रणाली (केस हिस्टरी मैथड)
इस प्रणाली में पात्र की असामाजिकता एवं कुंठा को जानने के लिए मनाविश्लेषक उसके पूर्ववृत्त तथा उसकी विगत अनुभूतियों को इकट्ठा करता है।

शब्द सह–स्मृति परीक्षण
यह एक प्रयोगात्मक प्रणाली है। जिसमें मनोवैज्ञानिक पात्र को एक के बाद एक शब्द सुनाते जाता है। उसके पश्चात् उन शब्दों में से कौन से शब्द ने उसे अधिक प्रभावित किया वह जानकर उसके विश्लेषण द्वारा पात्र की असाधारणता का पता लगाने की चेष्टा करता है।

नाटकीय चरित्र चित्रण प्रणाली
चरित्र की इस तीसरी प्रणाली के अन्तर्गत घटनाओं के द्वारा, कथोपकथन, प्रसिद्ध विद्वानों की उक्तियों एवं उद्धरणों द्वारा, पात्रों की डायरी या उनके निजी पत्रों द्वारा चरित्र का उद्घाटन किया जाता है?

बाधकता विश्लेषण
मुक्त आसंग पद्धति का ही यह एक भाग है। उसमें किसी न किसी प्रकार पात्र की उस बाधकता को दूर कर, उसके अचेतन मन में पड़ी उस अश्लील, असामाजिक, दुःखद स्मृतियों को उसके अचेतन में लाया जाए। यदि विश्लेषक अपने प्रयत्न में सफल हो जाता है, तब पात्र अपने असाधारण व्यवहार के अचेतन प्रेरकों को जानकर उस ढंग का व्यवहार करना छोड़ देगा

स्वप्न विश्लेषण
वास्तविक जीवन में कार्य की थकान मिटाने के लिए प्रत्येक व्यक्ति सोता है और अतृप्त वासनाओं की पूर्ति उसे स्वप्न जगत में ले जाती है। मुक्त आसंग पद्धति द्वारा व्यक्ति जो बात खुलकर लज्जा के कारण कर नहीं पाता वही बात वह किसी न किसी रूप में स्वप्नों द्वारा प्रगट करता है। कारण स्वप्न में यदि कोई बात उसके विवेक को उचित नहीं लगती तो वह रूप बदलकर आती है। स्वप्न संगठन के द्वारा ही मनोवैज्ञानिक उपन्यासकार पात्रों के असामाजिक कार्यों के प्रेरणा स्रोतों को खोजकर निकालता है।

संदर्भ सूची .

1. डॉ. धनराज मदानी, हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास, पृ. 147
2. जे. डी. शर्मा, जी. डी. सारस्वत मनोविज्ञान का इतिहासः पृ. 4.5
3. लालाजिराम शुक्ल, सरल मनोविज्ञान, पृ. 2
4. Pillusburry, P.B. Essentials of psychology, p.k~ 17
5. W.S. Roy, PsychologyAnd Introduction, p.14
6. ..... Is that segment that mind which is concerned with immediateAwareness. k~ [S.Freud, Quoted by J.F. Brown (1940)
7. "Consciousness is likeA surface orA skin up on vas unconsciousArea".
8. [C.G. Jung,Analytical Psychologyit's theoryAnd practical, p.7